चीन का दुष्प्रचार अभियान

दूसरे शब्दों में भारत द्वारा किए गए हमले के जवाब में की गई कार्रवाई भर था। जाहिर है, यह चीन के उस दुष्प्रचार अभियान का हिस्सा है, जिसके तहत वह खुद को ऐसे शांतिप्रिय देश के रूप में पेश करता है, जिसने कभी किसी पर हमला नहीं किया और न ही किसी के क्षेत्र में घुसपैठ की।

आरती सिंह।।

एक चीनी वेबसाइट पर हाल में ही प्रकाशित 1962 के भारत–चीन युद्ध का संशोधित इतिहास अंतरराष्ट्रीय प्रेक्षकों का ध्यान खींच रहा है। 8000 शब्दों के इस लेख में यह स्थापित करने की कोशिश की गई है कि वह चीन का आक्रमण नहीं बल्कि प्रत्याक्रमण था। दूसरे शब्दों में भारत द्वारा किए गए हमले के जवाब में की गई कार्रवाई भर था। जाहिर है, यह चीन के उस दुष्प्रचार अभियान का हिस्सा है, जिसके तहत वह खुद को ऐसे शांतिप्रिय देश के रूप में पेश करता है, जिसने कभी किसी पर हमला नहीं किया और न ही किसी के क्षेत्र में घुसपैठ की। इस अभियान के साथ एक बात तो यह है कि यह गलवान घाटी में हुई सैन्य झड़प की पृष्ठभूमि में सामने आया है और दूसरी बात यह कि इसमें वास्तविक इतिहास को इस तरह सिर के बल खड़ा कर दिया गया है कि इसे पचाना किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए संभव नहीं। यह संशोधित इतिहास लेकर सामने आई हैं चांग शियाकांग, जो पूर्व सैन्य कमांडर जनरल चांग ग्वोहुवा की बेटी हैं।

बहरहाल, बाकी बातें छोड़कर,सबसे पहले अगर इसी धारणा को लिया जाए कि चीन एक शांतिप्रिय देश है तो हाल के घटनाक्रम पर एक नजर डालने से ही इसकी चिंदियां बिखर जाती हैं। चीन हांगकांग के सवाल पर ब्रिटेन से, व्यापार को लेकर ऑस्ट्रेलिया से, ईस्ट चाइना सी के सेंकाकू द्वीपों के स्वामित्व के मसले पर जापान से, सैन्य शक्ति प्रदर्शन को लेकर अमेरिका से और साउथ चाइना सी पर नियंत्रण के सवाल पर साउथ ईस्ट एशियन देशों से पंगेबाजी करता रहा है।

जाहिर है, यह किसी शांतिप्रिय देश का लक्षण नहीं हो सकता। जहां तक 1962 युद्ध को लेकर बनाई जा रही नई धारणा का सवाल है तो इस लेख में कही गई बातें और इसमें दिए गए तथ्य ही इसके खिलाफ गवाही दे रहे हैं। इसमें दावा किया गया है कि माओ ने अपने करीबी राजनीतिक और सैन्य सहयोगियों की एक बैठक बुलाकर उसमें कहा था कि अगर हम काउंटर अटैक करें तो शायद सीमा विवाद को सुलझा सकते हैं और इसके जवाब में जनरल चांग ग्वोहुवा ने उन्हें भरोसा दिलाया था कि जी हां चेयरमैन, हम जरूर जीत सकते हैं। सवाल है कि क्या हमले का शिकार होने वाले किसी देश के सामने इतना मौका होता है कि वह बैठक में विचार–विमर्श करे, योजना बनाए और जीत सुनिश्चित होने का इत्मीनान कर लेने के बाद जवाबी हमला करे? वैसे भी 1962 युद्ध से जुड़े साक्ष्य आधारित विवरण मौजूद हैं, जो इस तरह के नए दावों की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करते हैं। ये विवरण इतना जरूर बताते हैं कि भारत के तत्कालीन नेतृत्व ने सीमा विवाद को सुलझाने में वैसी दिलचस्पी नहीं ली, जैसी लेनी चाहिए थी। इस वजह से संदेह और अविश्वास का माहौल बना और हालात बिगड़ते गए।

मनोदशा

अशोक वोहरा। यह भी गैर–धार्मिक आत्म–पारगमन, स्वयं की विस्मृति या अन्य गैर–धार्मिक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक डोमेन से संबंधित प्रतीत होता है। धार्मिक अनुष्ठानों के संदर्भ में, विभिन्न प्रकार के मतिभ्रम पदार्थ अक्सर परमानंद और रहस्यमय राज्यों को सुविधाजनक बनाने के लिए मौजूद होते हैं, जिनमें शामिल हैं।वास्तविकता और स्वयं की परिवर्तित धारणा, मनोदशा, दृश्य और श्रवण मतिभ्रम, आदि की गहनता।.मस्तिष्क समारोह और धार्मिक अनुभवों के बीच संबंध भी मस्तिष्क रोग या चोट के मामलों में स्पष्ट है। मिर्गी के रोगियों के एक छोटे समूह में, मस्तिष्क की असामान्य विद्युत गतिविधि के परिणामस्वरूप तीव्र धार्मिक भय, परमानंद या दैवीय उपस्थिति की भावनाएं होती हैं, जो एक जब्ती की ओर जाने वाली आभा का गठन करती हैं।

संपादकीय

कर सकते हैं कंट्रोल

सरकार दो काम कर सकती है। पहली यह कि एफसीआई के गोदामों में अभी भी 9 करोड़ टन से ज्यादा अनाज पड़ा हुआ है। सारे फील्ड सर्वे दिखाते हैं कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना में जो मुफ्त अनाज दिया जा रहा था, वह जिनके पास राशन कार्ड है, उन तक पहुंच रहा था और लोगों की काफी मदद भी कर रहा था। यह योजना इसी महीने मार्च में खत्म होने वाली है। इसे और बढ़ाया जाए। जब तक महामारी है, इसमें उन्हें भी जोड़ा जाए, जिनके पास राशन कार्ड नहीं है। दूसरे, सरकार यह कर सकती कि वह दाल और तेल की मंडियों से खरीद करे और इनको कम दाम में राशन की दुकानों के जरिए बांटे, ताकि इन चीजों के दाम स्थिर रहें। इससे अभी लोगों को न सिर्फ मदद मिलेगी, बल्कि यह लंबे समय के लिए भी अच्छा होगा। पिछली बार जब सरकार ने दाल खरीदकर कम दाम में उसे बेचा था, तब हमने देखा कि किसानों ने दाल का उत्पादन भी बढ़ा दिया और आयात पर हमारी निर्भरता भी कम हो गई। भारत में हम देखते हैं कि जीडीपी ग्रोथ घट गई है और आर्थिक रिकवरी की बात हो रही है। सब लोग कह रहे हैं कि बाजार में मांग की समस्या है, लोगों की खरीदने की क्षमता गिर गई है। ऐसे में हम समझ सकते हैं कि एक तरफ भूख बढ़ी हुई है, दूसरी तरफ अगर दाम भी बढ़ेंगे तो लोगों की खरीदने की क्षमता और भी कम हो जाएगी।

रूस और यूक्रेन में जो युद्ध चल रहा है, उसके चलते आने वाले दिनों में मुद्रास्फीति के और बढ़ने की आशंका है। रूस दुनिया में तेल सप्लाई करने वाला दूसरा बड़ा देश है।

खाने पर खर्च

दीपा सिन्हा।।

पिछले एक साल में देखा गया है कि महंगाई पूरी दुनिया में बढ़ती जा रही है, खासकर खाद्य पदार्थों की। इसके कई कारण हैं। मुख्य तो यही कि महामारी के चलते दुनिया भर में होने वाली सप्लाई में रुकावट आई है। लॉकडाउन लगे हैं, आने–जाने पर रोक लगाई गई। इसके साथ–साथ ईंधन के दाम भी बढ़े हैं। भारत में भी तेल के दाम के साथ बाकी महंगाई बढ़ रही है। रूस और यूक्रेन में जो युद्ध चल रहा है, उसके चलते आने वाले दिनों में मुद्रास्फीति के और बढ़ने की आशंका है। रूस दुनिया में तेल सप्लाई करने वाला दूसरा बड़ा देश है। उसका जो तेल यूरोप की तरफ जाता है, वह यूक्रेन से गुजरता है। जब तक इन दोनों देशों के बीच झगड़ा चलेगा, हम देखेंगे कि तेल के दाम भी बढ़ेंगे। और तेल के दामों के साथ खाद्य पदार्थों का भी दाम बढ़ता है।

इसके दो कारण हैं। पहला, उत्पादन के लिए डीजल–पेट्रोल एक महत्वपूर्ण इनपुट है। खाद या खेती में काम आने वाली दूसरी चीजों पर इसके दाम का असर पड़ता है। फसल को बाजार में पहुंचाने में भी तेल लगता है। खाद्य पदार्थों के दाम बढ़ने का असर गरीब देशों में रहने वाले लोगों पर तो और ज्यादा पड़ता है। उनकी पूरी आय का ज्यादातर हिस्सा भोजन में ही चला जाता है। उदाहरण के लिए, भारत में

एक आम मध्यमवर्गीय परिवार जितना खर्च करता है, उसमें औसतन 30 प्रतिशत, यानी एक तिहाई खर्च खाद्य पदार्थों पर होता है।

मगर गरीब आबादी में आमदनी का 50–60 प्रतिशत भोजन पर खर्च होता है। जैसे ही खाने का दाम बढ़ता है, उसका असर भोजन की गुणवत्ता पर पड़ता है। लोग अच्छी गुणवत्ता वाला खाना खरीदना कम कर देते हैं। बाकी चीजों की भी खरीद कम हो जाती है। उदाहरण के लिए, लोग स्वास्थ्य, शिक्षा या ट्रांसपोर्ट खर्च में कटौती करते हैं। एकदम बेसिक चीजों पर भी लोग खर्च घटा देते हैं।

महामारी के चलते हमने देखा है कि दुनिया भर में भूख और खाद्य असुरक्षा बढ़ी है। संयुक्त राष्ट्र के फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक 2020 के बाद लगभग 12 करोड़ और लोग महामारी के चलते भूख की जद में आए हैं। बात भारत की करें, तो पिछले साल से हमने खाद्य पदार्थों के दाम बढ़ते देखे, खासकर दाल और खाद्य तेल के। दोनों चीजें हमारे खाने में बहुत ही जरूरी हैं। इनके बिना खाना पौष्टिक नहीं हो सकता। पिछले साल हमने देखा कि खाने के तेल के दाम लगभग दोगुना हो गए थे। अब जब पूरी दुनिया में दाम बढ़ रहे हैं तो भारत में भी इसमें और बढ़ोतरी की आशंका है।

भारत में जितना खाने का तेल इस्तेमाल होता है, उसका 60 प्रतिशत बाहर से आता है। जो तेल हम लोग आयात करते हैं, उसमें सूरजमुखी का तेल प्रमुख है। इसका 80 प्रतिशत हिस्सा यूक्रेन से आता है। इससे हम समझ सकते हैं कि लगातार जो दाम बढ़ रहे हैं, वह तो है ही, लेकिन कुछ खाद्य पदार्थों के दाम और ज्यादा बढ़ेंगे।

सूडोकु बवाल- 5214

***** कठिनतम

				5	1	4		
			7				2	
		8						3
	1							8
5				4				9
7							6	
4						7		
	2				6			
		3	9	8				

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु बवाल -5213 का हल

4	7	6	3	5	2	9	1	8
5	9	8	6	7	1	4	3	2
2	3	1	8	9	4	7	6	5
6	8	5	7	3	9	2	4	1
3	2	4	5	1	6	8	7	9
7	1	9	4	2	8	3	5	6
8	4	3	2	6	5	1	9	7
1	5	2	9	4	7	6	8	3
9	6	7	1	8	3	5	2	4

अपना ब्लॉग

भूख और खाद्य असुरक्षा भी बढ़ी

मोहन। भारत में महामारी के बाद हुए ढेरों सर्वे दिखा रहे हैं कि बेरोजगारी बढ़ी है, आय घटी है और इससे भूख और खाद्य असुरक्षा भी बढ़ी है। उदाहरण के लिए, पिछले दिनों राइट टु फूड, रोजी–रोटी अधिकार अभियान ने एक हंगर वॉच–2 के नाम से सर्वे किया। यह 14 राज्यों में लगभग 7 हजार लोगों के बीच किया गया। इनमें से 80 प्रतिशत ने कहा कि वे किसी ना किसी तरह की खाद्य असुरक्षा महसूस करते हैं। इनमें से भी 25 प्रतिशत लोग गंभीर खाद्य असुरक्षा महसूस करते हैं। इसी सर्वे में यह भी निकला कि 40 प्रतिशत से ज्यादा लोगों ने कहा कि महामारी से पहले फरवरी 2020 में जितना और जिस गुणवत्ता का खाना वे खा पाते थे, दो साल बाद अभी वे उससे भी कम खा पा रहे हैं। खाद्य असुरक्षा और भूख की समस्या इस वजह से भी बढ़ी है कि सिर्फ खाद्य पदार्थों के दाम ही नहीं बढ़ रहे, एलपीजी गैस के भी दाम बढ़ रहे हैं, उस पर सब्सिडी घट गई है। सर्वे में शामिल दो–तिहाई लोगों ने कहा कि पिछले महीने वे गैस खरीद नहीं पाए क्योंकि उनके लिए उसका खर्च उठाना संभव नहीं था।